Guidance And Counseling

- Definition and meaning.
- Difference between guidance and Counselling
- Types of Guidance – personal, Educational, Vocational: Aims, needs and techniques.
- Role of the Teacher and School in guidance and counselling

By
Dr Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

Guidance Guidance And Counselling

Meaning and Definition of guidance :-

निर्देशन का अर्थ - मार्गदर्शन या पथ प्रदर्शन।

प्रत्येक व्यक्ति के सामने समायोजन की समस्या होती है। समस्याओं का समाधान वह अपनी व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार करता है और कभी - कभी क्षमता की कमी के कारण वह समायोजन में असफल रहता है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति को मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शन की अत्यन्त आवश्यकता है क्यों कि शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाती है। मनोविज्ञान में मार्गदर्शन का प्रयोग विशेष अर्थ में किया जाता है। मनोविज्ञान में मार्ग प्रदर्शन उस निजी सहायता को कहा जाता है जो एक मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति को देता है।

→ निर्देशन व्यक्ति की समस्याओं को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

→ निर्देशन व्यक्ति की सहायता करने का एक साधन है।

→ निर्देशन का केन्द्र व्यक्ति है, वह व्यक्ति की उचित एवं क्रमबद्ध रीति से सहायता करना है, ताकि व्यक्ति स्वयं अपने पैरों पर खड़ा हो जाये।

Definitions:

Skinner - "निर्देशन, नवयुवकों को अपने से, दूसरों से और परिस्थितियों से सामंजस्य करना सीखने के लिए सहायता देने की प्रक्रिया है।"

Scanned with CamScanner

"Guidance is a process of helping young persons learn to adjust to self, to others and to circumstances." - Skinner.

Jones Arthur J - "व्यक्तियों को बुद्धिमतापूर्वक चुनाव तथा समायोजन करने में दी जाने वाली सहायता निर्देशन है।"

"Guidance is the assistance given to individual in making intelligent choices and adjustment."

Counselling परामर्श

मार्गदर्शन कार्यक्रम में परामर्श सेवा का महत्व सर्वाधिक है। वैबस्टर के अनुसार - "परामर्श से अभिप्राय सलाह, विचार विनिमय तथा इच्छापूर्वक साहचर्य से है।" मार्ग-दर्शन कार्यक्रम का आवश्यक अंग परामर्श है।

हम्फ्री तथा ट्रैक्सलर के अनुसार - 'परामर्श, व्यक्ति की समस्याओं के विद्यालय अथवा संस्था स्रोतों से समाधान की प्रक्रिया है।"

→ परामर्श व्यक्तिगत सन्दर्भ सूचक है।

→ परामर्श वैज्ञानिक सुझाव है।

→ परामर्श अधिगम में सहायक होता है।

Differences between guidance & Counselling:

Guidance	Counselling
1. निर्देशन व्यक्ति पर ध्यान देता है, समस्या पर नहीं।	परामर्श नैतिक व्यवहार से युक्त होता है।
2. निर्देशन यद्यपि व्यक्तिगत प्रक्रिया है लेकिन निर्देशन समूह में भी दिया जाता है जिसे सामूहिक निर्देशन कहा जाता है	परामर्श व्यक्तिगत होता है। परामर्श देने का कार्य समूह में सम्भव नहीं है। परामर्श एक प्रकार का साक्षात्कार है और साक्षात्कार समूह में सम्भव नहीं है।
3. निर्देशन एक व्यापक अर्थ की ओर संकेत करता है।	परामर्श का क्षेत्र तथा कार्य निर्देशन की अपेक्षा संकीर्ण है।
4. निर्देशन व्यक्ति में अन्तर्दृष्टि का विकास करके उसको अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को समझने में सहायता करता है ताकि व्यक्ति अपनी कठिनाइयों के निवारण में किसी अन्य पर निर्भर न रहें।	परामर्श एक प्रविधि है जो अन्य अनेक प्रविधियों की भाँति इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायता करती है।

Scanned with CamScanner

- निर्देशन व्यक्ति को समस्या समाधान के योग्य बनाना
- योग्यता क्षमता के अनुसार व्यावसायिक तथा शैक्षिक अवसर प्रदान ~~कर~~ कराना
- व्यवसाय में सफलता प्राप्त करना।
- नवीन परिस्थिति में समायोजन की क्षमता उत्पन्न करना।
- आवश्यकतानुरूप परामर्श की व्यवस्था करना।
- यह व्यक्ति तथा समाज दोनों की प्रगति चाहता है।

यह व्यक्तिगत संदर्भ सूचक है। सेवार्थी को स्वयं निर्णय लेना पड़ता है।

परामर्श वैज्ञानिक सुझाव है। परामर्श अधिगम में सहायक होता है।

छात्रों की योग्यता के अनुसार परामर्श देना।

मार्गदर्शन की एक आवश्यक विधा परामर्श है। यह वैधिक योग्यता रखता है।

विद्यालयों में परामर्शदाता का कार्य शिक्षक करते है।

अतः निर्देशन और परामर्श में एक समानता है कि दोनों में निर्णय थोपे नहीं जाते है अपितु प्राणी को इस योग्य बनाया जाता है कि वह निर्णय स्वयं ले। दोनों में निर्देशक और परामर्शदाता स्वयं किसी पर भार नहीं होते है, बल्कि प्राणी में निहित क्षमताओं का ज्ञान कराकर उसे अपना भार स्वयं ढोने के लिए प्रेरित किया जाता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि परामर्श

निर्देशन का अभिन्न अंग है। परामर्श निर्देशन की एक प्रविधि है।

Types of Guidance.

1. Personal Guidance.
2. Educational Guidance
3. Vocational Guidance

① Personal Guidance (व्यक्तिगत निर्देशन)

व्यक्तिगत निर्देशन के अन्तर्गत व्यक्ति को अलग निर्देश दिया जाता है। व्यक्ति को उसकी अपनी समस्याओं से अवगत कराया जाता है, और उसे सलाह दी जाती है कि वह भविष्य के प्रति सजग रहें।

व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य (Aims) →

व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति के विकास में सहायता करना है। व्यक्ति केवल रोटी के लिए ही नहीं जीवित है। व्यक्ति एक विकासशील प्राणी है। व्यक्ति में अनेकों प्रकृति प्रदत शक्तियां बीज रूप में निहित है। व्यक्ति को अपनी इन अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना है। निर्देशन इस विकास में सहायता करेगा।

व्यक्तिगत निर्देशन से व्यक्ति मानव

बनने की ओर अग्रसर होता है। व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को मानव बनाना है। व्यक्तिगत निर्देशन में व्यक्ति को सहायता दी जाती है ताकि वह अपने जीवन के आदर्शों का विकास कर सके।

व्यक्तिगत निर्देशन की आवश्यकता (Needs)

व्यक्तिगत निर्देशन, व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिये दिया जाता है।

Needs :-

1. व्यक्तिगत जीवन में सुख-शान्ति एवं संतोष का विकास।
2. व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान हेतु सही निर्णय
3. व्यक्तिगत संमंजन की क्षमता का विकास।
4. व्यक्तिगत कौशलों का विकास।
5. पारिवारिक एवं व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य
6. पारिवारिक एवं वैयक्तिक तनावों को कम करन

Scanned with CamScanner

Techniques of personal Guidance
व्यक्तिगत निर्देशन की विधियाँ :

व्यक्तिगत निर्देशन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और यह प्राइमरी स्कुल से लेकर कालेज तक चलने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक विद्यालय में छात्रों के आदर्शों के आदर्शों से सम्बन्धित लेख अवश्य होने चाहिए। छात्र की प्रगति पत्रिका में तथा अभिसंचित लेख में छात्र के आदर्शों से सम्बन्धित तथा जीवन की मान्यताओं का संकेत होना चाहिए। निर्देशक इन लेखों का अध्ययन करके छात्र से वार्तालाप करके उसका साक्षात्कार करके तथा उसके अभिभावक एवं शिक्षकों से उसके सम्बन्ध में पूछताछ करके छात्रों का पर्याप्त ~~अनुमान~~ अनुमान लगा सकते है। तथा छात्रों को निर्देशन कर सकें। जैसे —

(i) अपने को यथासम्भव स्वस्थ एवं दृढ़ प्रतिज्ञा रखना चाहिए।

(ii) किसी भी कार्य को करने से पहले उसकी योजना अवश्य बनानी चाहिए।

(iii) ईमानदारी, जीवन में प्रसन्नता, बुद्धि, मैत्रीभाव आदि गुणों से ही मानव को मापा जाता है

(iv) अपने को पहचानने का प्रयत्न करना चाहिए। अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही अपने कार्यक्रम बनाने चाहिए।

Scanned with CamScanner

(v) मित्रों का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए।

(vi) देश के प्रति स्वामिभक्ति का विकास करना चाहिए।

(vii) जीवन में आनन्द प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(viii) सृजनात्मक कार्यों में रुचि का विकास करना है।

व्यक्तिगत निर्देशन में अवकाश के समय को सदुपयोग करने से व्यक्ति महान् बन सकता है अतः अवकाश के समय को सुन्दर ढंग से बिताने के लिए छात्रों को निर्देशक से सहायता लेनी चाहिए।

Educational Guidance (शैक्षिक निर्देशन)

Jones - "Educational guidance, is so far as it can be distinguished from other aspects of guidance is concerned with the assistance given to pupils in their choices and adjustments with Relation to schools, curriculum, courses and school life.

जोन्स के शब्दों में - "शैक्षिक निर्देशन, जहाँ तक उसको निर्देशन के अन्य पहलुओं से अलग किया जा सकता है, विद्यार्थियों को स्कूलों, पाठ्यक्रमों, पाठ्य-विषयों और विद्यालयों के जीवन से सम्बन्धित उनके चुनावों और समायोजन के लिए दी गई सहायता से सम्बन्धित है।"

Scanned with CamScanner

Educational Needs - शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता

शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता प्राय: उन विद्यार्थियों को होती है, जिनके सामने कोई समस्या होती है और जिसको वे स्वयं नहीं सुलझा सकते। इसके लिए उन्हें विशेषज्ञ के रूप में मनोवैज्ञानिक की निजी सहायता की आवश्यकता पड़ती है। यह भी स्पष्ट है कि शैक्षिक निर्देशन शिक्षा सम्बन्धी चुनावों के लिए दिया जाता है जैसे— विद्यालय का चुनाव, पाठ्यक्रम का चुनाव, पाठ्यविषयों का चुनाव। शैक्षिक निर्देशन शिक्षा सम्बन्धी समायोजन के लिये दिया जाता है। समायोजन सम्बन्धी समस्यों को हल करने के लिए शिक्षा सम्बन्धी निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है। अत: शैक्षिक निर्देशन का उद्देश्य विद्यार्थी को शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाना, अच्छे पाठ्यक्रम का चुनाव करना तथा उनको स्कूल की परिस्थियों से समायोजन करने के योग्य बनाना है। मुख्यत: शैक्षिक निर्देशन के निम्नलिखित ~~कार्य है~~ — उद्देश्य: Aims.

Aims

i. योग्यता और क्षमता के अनुकूल पाठ्यक्रम का चुनाव।

ii. अध्ययन की विधि में सुधार

iii. पिछड़े बालकों के लिए शिक्षा की विशेष विधि की व्यवस्था।

(iv) प्रतिभाशाली बालकों के लिए विशेष प्रकार के कार्यक्रम की व्यवस्था।

Scanned with CamScanner

(v) परीक्षाओं में असफलताओं की समस्या का समाधान।

(vi) विद्यार्थी की अध्ययन सम्बन्धी प्रेरणा को प्रोत्साहित करना।

(vii) विशेष रूप से विद्यार्थियों की कमजोरी को दूर करना।

(viii) प्रधानाचार्य का उद्देश्य विद्यालय में निर्देशन कार्यक्रम को नेतृत्व प्रदान करना। आधुनिक साहित्य एवं नूतनतम सूचनाओं की व्यवस्था करवाना।

(iv) शैक्षिक निर्देशन में कक्षा अध्यापक की भूमिका प्रमुख एवं महत्वपूर्ण है क्योंकि वह छात्रों के सीधे सम्पर्क में रहता है।

→ Edith के अनुसार - अध्यापक ही छात्रों को अन्तिम परीक्षण प्रदान करता है। कारण अध्यापक ही कक्षा की रुचि योग्यता क्षमता तथा समस्याओं को पहचानता है। अध्यापक ही अभिभावकों के सम्पर्क में रहते हैं।

उपर्युक्त शैक्षिक निर्देशन की उद्देश्य से यह स्पष्ट है कि सभी समस्याओं में शिक्षा की ही विभिन्न समस्याओं से सम्बन्ध है।

Techniques of Educational Guidance (शैक्षिक निर्देशन की विधियाँ ! - शैक्षिक निर्देशन में व्यक्ति के विषय में निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त करना

आवश्यक है:-

i विद्वता सम्प्राप्ति (Scholastic Attainments)

ii बौद्धिक स्तर (Level of Intelligence)

iii विशेष मानसिक योग्यतायें (Special Mental Abilities)

iv अभिरुचियाँ तथा अभिवृत्तियाँ (Aptitudes and Attitudes)

v) रुचि (Interest)

vi) व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषतायें (personality characteristics)

vii) स्वास्थ्य तथा शारीरिक विकास (Health and Physical Development)

viii) पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्थिति (Family Background and Economic Condition)

उपर्युक्त सूचनायें एकत्र करना शैक्षिक निर्देशन प्रक्रिया की दिशा में उठाया गया पहला कदम है। दूसरा कदम - पाठ्य विषय, पाठ्यक्रम, स्कूल आदि के विषय में विस्तृत सूचनायें एकत्र करना है। शैक्षिक निर्देशन का काम विद्यार्थियों को उसकी योग्यता के अनुकूल अपनी शैक्षिक कार्यक्रम का चुनाव करना।

इसके अलावा विद्यार्थी को मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गई निजी सलाह है। जैसे -

i मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Testing)

ii) विद्यालय से तथ्यों का संकलन (Collection of data from School)

iii) पारिवारिक तथ्यों का संकलन (Collection of data of family)

iv) बालक से साक्षात्कार (Interview)

v) पार्श्वचित्र का निर्माण (Formation of Profile)

vi) अनुवर्ती अध्ययन (~~Formation of the profile~~) (Follow up studies)

vii) निर्देशन (Guidance)

Vocational Guidance (व्यावसायिक निर्देशन)

व्यावसायिक निर्देशन व्यक्ति की विशेषताओं एवं व्यावसायिक अवसर से उसके सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक चुनाव और प्रगति से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने में किसी व्यक्ति को दी गई सहायता है। व्यक्ति व्यावसायिक निर्देशन के अन्तर्गत वे सुझाव दिये जाते हैं, जिनसे बालक भविष्य के लिए व्यवसाय का चुनाव करता है। बालक अपनी रुचि, कार्य-क्षमता के अनुसार अपना व्यवसाय चुनता है।

Scanned with CamScanner

Aims of Vocational Guidance (व्यावसायिक निर्देशन के उद्देश्य)

(i) छात्र को विभिन्न व्यवसायों के स्वरूप एवं कार्यों की जानकारी प्राप्त करने में सहायता देना तथा स्वानुकूल व्यवसायों के निमित्त सामान्य एवं विशिष्ट योग्यताओं से परिचित होने में सहायता देना।

(ii) विद्यालय के अन्दर तथा बाहर ऐसे अवसर प्रदान करना जिससे छात्र कार्य की परिस्थितियों से परिचय प्राप्त कर सकें एवं अपनी रुचि का विस्तार कर सकें।

(iii) छात्र में इस भावना का विकास करने में सहायता देना कि ईमानदारी से किया हुआ कोई भी कार्य श्रेष्ठ होता है।

(iv) छात्र में व्यवसाय सम्बन्धी सूचनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(v) व्यवसाय का बुद्धिमतापूर्ण निर्वाचन करने के लिए जिन योग्यताओं एवं रुचियों की आवश्यकता पड़ेगी, उसकी जानकारी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना।

(vi) जिन छात्रों की आर्थिक स्थिति शोचनीय है, उन्हें जनकोष से सहायता प्राप्त करने अथवा छात्रवृत्ति पाने में सहायता करना।

(vii) व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं

Scanned with CamScanner

के कार्यों एवं उनमें प्रवेश हेतु योग्यताओं का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना।

Needs of Vocational Guidance - व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकताएँ।

व्यवसायिक निर्देशन की आवश्यकताएँ है कि छात्रों की अपनी निजी विकास करने और सन्तोष प्राप्त करने में सहायता देकर राष्ट्र की जन शक्ति का पूर्ण और प्रभावशाली उपयोग होने में सहायता देना है। व्यवसायिक निर्देशन के दो प्रमुख पहलू है (i) व्यक्ति का अध्ययन तथा (ii) व्यवसाय जगत का अध्ययन। व्यक्ति अध्ययन में - व्यक्ति की शिक्षा बुद्धि मानसिक योग्यताओं, अभिरुचियों, शारीरिक विकास, स्वास्थ्य, स्वभाव तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं की पर्याप्त जानकारी करना है व्यवसाय जगत के अध्ययन में - व्यवसायों के विषय में व्यापक ज्ञान देना, विभिन्न व्यवसायों की शिक्षा, प्रशिक्षण, बुद्धि, मानसिक योग्यताएँ, रुचि, अभिरुचि इत्यादि।

व्यावसायिक निर्देशन को निर्देशन के अन्य रूपों से अलग नहीं किया जा सकता है। व्यक्ति अपनी शैक्षिक पृष्ठभूमि के अनुसार ही व्यवसाय का निर्वाचन करता है। अतः शैक्षिक जीवन का व्यवसायिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उचित कार्य का निर्वाचन करना तथा कार्य की प्राप्ति अच्छी नागरिकता के लिए आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

Techniques of Vocational Guidance (व्यावसायिक निर्देशन की विधियाँ)

विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ-साथ ~~व्यवसाय~~ व्यवसाय के सम्बन्ध में अनेकों सूचनायें दी जा सकती है। जैसे —

→ **सामान्य विषय** — सामान्य विषयों का अध्यापन करते समय शिक्षक व्यवसाय की सूचना दे सकते हैं। इसलिए इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, वाणिज्य, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीवविज्ञान आदि विषयों को पढ़ाते समय इनसे सम्बन्धित व्यवसायों का सन्दर्भ दे सकते हैं।

→ **सहायक पुस्तकें** — किसी भी विषय की सहायक पुस्तकों में जहाँ पर व्यवसाय का वर्णन हो वहाँ पर आवश्यक सूचना छात्रों को दी जा सकती है। भाषा में स्वीकृत सहायक पुस्तकों में पर्याप्त व्यावसायिक सूचना रहती है। जैसे — किसी में लोहे के कारखाने का वर्णन हो सकता है, तो कहीं सफल अध्यापक के गुणों की सराहना मिल सकती है, तो कहीं पुस्तकों में व्यापार के नियमों का वर्णन, यन्त्रों का वर्णन जो बालक को पर्याप्त व्यावसायिक सूचना प्राप्त हो सकती है।

→ **निबन्ध** — हिन्दी में निबन्ध देना जैसे — १ सफलता का रहस्य, २ मेरा रुचिकर कार्य, ३ कृषि से लाभ, ४ मेरा भावी जीवन, ५ सफल शिक्षक इन से शिक्षक व्यावसायिक सूचनाएँ छात्रों दे सकते हैं।

Scanned with CamScanner

→ कारखानों एवं व्यावसायिक ~~केन्द्रों~~ केन्द्रों का भ्रमण।

कभी-कभी विद्यालय की ओर से छात्रों को भ्रमण का प्रबन्ध किया जाना चाहिए ताकि छात्र व्यक्तिगत रूप से कारखानों को प्रत्यक्ष रूप दे सके एवं कार्य का निरीक्षण करने का अवसर मिले।

→ चित्रपट तथा रेडियो -

छात्रों को चित्रपट देखकर तथा रेडियो के कार्यक्रम को सुनकर अनेकों व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त होता है।

→ विवरण पत्रिकाएँ -

पत्रिकाओं में व्यवसाय का स्वरूप तथा व्यवसाय में प्राप्त जानकारी प्राप्त होती है। तथा -

→ व्यवसाय का निर्वाचन विद्यालय छोड़ने से पूर्व ही कर लेना ठीक होता है।

→ छात्र अपने व्यवसाय का निर्णय शीघ्रता में न करे।

→ व्यवसाय में उन्नति करने के अवसर पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

Scanned with CamScanner

निर्देशन और परामर्श कार्यक्रम में शिक्षकों और विद्यालय की भूमिका
(Role of Teacher and School in Guidance and Counselling)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर कमीशन 1952-53) ने अपनी संस्तुतियों में कहा था कि निर्देशन सेवाओं को माध्यमिक शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में न केवल इन सेवाओं की आवश्यकता पर बल दिया है; अपितु इनके महत्व को सिद्ध भी किया है। भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी कमीशन 1964-66) ने भी अपनी संस्तुतियों में कहा कि निर्देशन को शिक्षा का अभिन्न अंग समझा जाए और इसे प्राथमिक स्तर से ही शुरू किया जाए। प्रसिद्ध विद्वान जोन्स (Jones) ने विद्यालय में निर्देशन व्यवस्था के सम्बन्ध में कहा, *"निर्देशन को विद्यालय के सामान्य जीवन से पृथक् नहीं किया जा सकता, न इसको विद्यालय के किसी एक विशेष भाग में केन्द्रित किया जा सकता है, न इसको परामर्शदाता या प्रधानाचार्य के कार्यालय तक सीमित किया जा सकता है, क्योंकि निर्देशन सहायता देना विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक का कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व है। अतः इस कार्य में सभी का सहयोग प्राप्त होना चाहिए और इसी प्रकार यह कार्य किया जाना चाहिए।"*

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में अनेकानेक परिवर्तन हुए हैं, जिन्होंने विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं को और भी आवश्यक बना दिया है। इन परिवर्तनों में यह चार परिवर्तन तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं—(i) आधुनिक भारत में परिवारों का रूप इतना बदल गया है कि बालक उसमें रहकर अपने पिता के कार्य या व्यवसाय का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं कर सकता। (ii) बालक के माता-पिता अपने स्वयं के कार्य और मनोरंजन के संसार में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास अपने बालकों को किसी प्रकार का निर्देशन देने के लिए समय ही नहीं है। (iii) भारत में व्यवसायों का इतना बाहुल्य हो गया है कि बालक स्वयं ही अपने लिए उपयुक्त व्यवसाय का चयन नहीं कर सकता और (iv) आज देश में प्रत्येक क्षेत्र (सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि) में इतने अधिक परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं कि बालक यह निश्चय नहीं कर पाता कि वह किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके इन परिवर्तनों से अपना समायोजन स्थापित करे। इन सभी परिवर्तनों के कारण संसार के अन्य प्रगतिशील देशों के विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम की होने वाली व्यवस्था की तरह हमारे देश के विद्यालयों में भी निर्देशन और परामर्श के कार्यक्रम की समुचित और सुव्यवस्थित व्यवस्था होनी आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रम में शिक्षकों की भूमिका
(Role of Teachers in Guidance and Counselling Programme)

विद्यालय के निर्देशन कार्यक्रम में शिक्षकों की बहुत ही महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली भूमिका होती है, क्योंकि वे छात्रों के निकट सम्पर्क में बहुत अधिक रहते हैं। इससे शिक्षकों को छात्रों को समझने का, उनकी इच्छाओं और आवश्यकताओं को जानने का, विभिन्न परिस्थितियों में उनके व्यवहार, आचरण और कार्यों का अवलोकन करने का अधिक अवसर प्राप्त होता है। वे उनकी कठिनाईयों और समस्याओं से भी खूब परिचित होते हैं। इन सब बातों से छात्रों को निर्देशन और परामर्श देने में बहुत सहायता मिलती है। अपने छात्रों से निकटता होने के कारण शिक्षक उनसे सम्बन्धित सभी प्रकार की सूचनायें सहजता और आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। निर्देशन और परामर्श सम्बन्धित व्यवस्था और कार्यक्रमों में शिक्षकों की भूमिका को निम्नलिखित बिन्दुओं में वर्णित किया जा सकता है—

(1) छात्रों के साथ वैयक्तिक सम्पर्क स्थापित करना।
(2) छात्रों के व्यक्तित्व के विकास के लिए उचित परिस्थितियाँ और अवसर प्रदान करना।
(3) कुसमायोजित छात्रों का पता लगाना।
(4) छात्रों से सम्बन्धित समस्त जानकारियाँ प्राप्त करके, उनका संचित अभिलेख पत्र (Cumulative Record Card) तैयार करना।
(5) छात्रों का व्यक्ति इतिहास (Case History) तैयार करना।
(6) विभिन्न परिस्थितियों में छात्रों का अवलोकन (Observation) करके, उनके व्यवहार, आचरण, आदतों, कार्यों आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
(7) अपने विषय से सम्बन्धित परीक्षणों का निर्माण करना और उनके माध्यम से छात्रों का परीक्षण करके, उनकी उपलब्धियों और ज्ञानार्जन क्षमता का पता लगाना।

---

(8) समय-समय पर छात्रों का साक्षात्कार करके उनकी रूचियों, अभिरूचियों आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
(9) सीखने में कठिनाई का अनुभव करने वाले छात्रों को परामर्शदाता के पास भेजना।
(10) अपने विषय से सम्बन्धित जीविकाओं और शैक्षिक अवसरों के सम्बन्ध में छात्रों को सूचनाएँ प्रदान करना।
(11) छात्रों की समायोजन सम्बन्धी कठिनाईयों का पता लगाकर, उनका समाधन करने में सहायता करना।
(12) छात्रों को पुस्तकालय का उचित और अधिकाधिक उपयोग करना सिखाना।
(13) विद्यालय में अधिक-से-अधिक पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना और उनमें भाग लेने के लिए छात्रों को प्रेरित करना।
(14) छात्रों में अच्छी आदतों का निर्माण करने में सहायता करना।
(15) छात्रों को शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में समायोजन करने में सहायता करना।
(16) छात्रों के ज्ञानार्जन हेतु विद्यालय में विभिन्न विशेषज्ञों के व्याख्यान कराना।
(17) छात्रों के माता-पिता और अभिभावकों से छात्रों की प्रगति के विषय में समय-समय पर परामर्श करना।
(18) अध्यापक-अभिभावक संघ को प्रभावी बनाने में सहायता करना।
(19) छात्रों को अधिकतम विकास के अधिकतम अवसर प्रदान करना।
(20) निर्देशन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रधानाचार्य और अन्य निर्देशक कार्यकर्त्ताओं को सहयोग प्रदान करना।

Scanned with CamScanner